**चिंतामणि (पहला भाग): विचारात्मक निबंध मंजूषा सहित /** आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(परिग्रहण संख्या H12603)

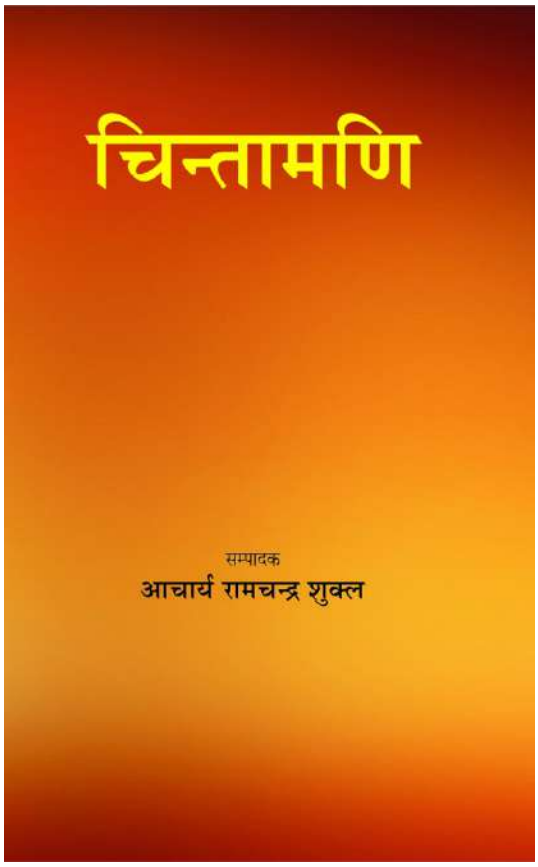


**सारांश:** ''यदि वाणी की शक्ति ईश्वर का सबसे उत्तम प्रसाद है; यदि भाषा की उत्पत्ति बहुत-से विद्वानों द्वारा ईश्वर से मानी गयी है? यदि शब्दों द्वारा अन्तःकरण के गुप्त रहस्य प्रकट किये जाते हैं; चित्त की वेदना को शान्ति दी जाती है; हृदय में बैठा हुआ शोक बाहर निकाल दिया जाता है; दया उत्पन्न की जाती है और बुद्धि चिरस्थायी बनायी जाती है; यदि बड़े ग्रन्थकारों द्वारा बहुत-से मनुष्य मिलकर एक बनाये जाते हैं; जातीय क स्थापित होता है; भूत और भविष्य तथा पूर्व और पश्चिम एक-दूसरे के सम्मुख उपस्थित किये जाते हैं; और यदि ऐसे लोग मनुष्य जाति में अवतार-स्वरूप माने जाते हैं - तो साहित्य की अवहेलना करना और उसके अध्ययन से मुख मोड़ना कितनी बड़ी भारी कृतघ्नता है !'' 'साहित्य' शीर्षक निबन्ध से.

**तिरस्कार तथा अन्य कहानियाँ /** सुरेंद्र कुमार (परिग्रहण संख्या H12604)

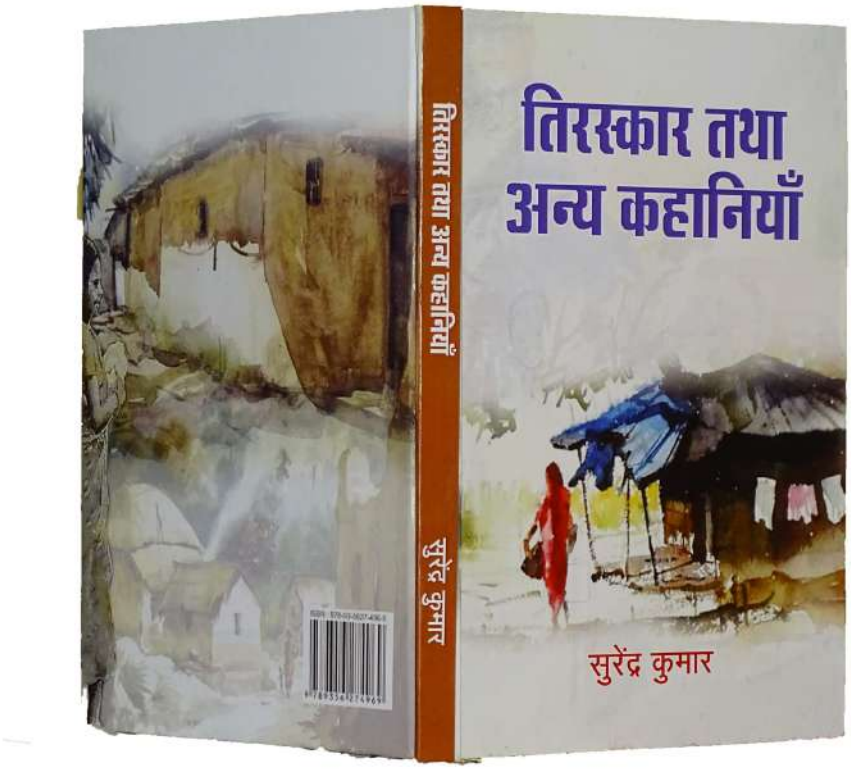

**राग - विराग: महाकवि निराला की सर्वश्रेष्ठ कविताओं का संकलन /** सूर्यकांत त्रिपाठी निराला & रामविलास शर्मा (परिग्रहण संख्या H12602)

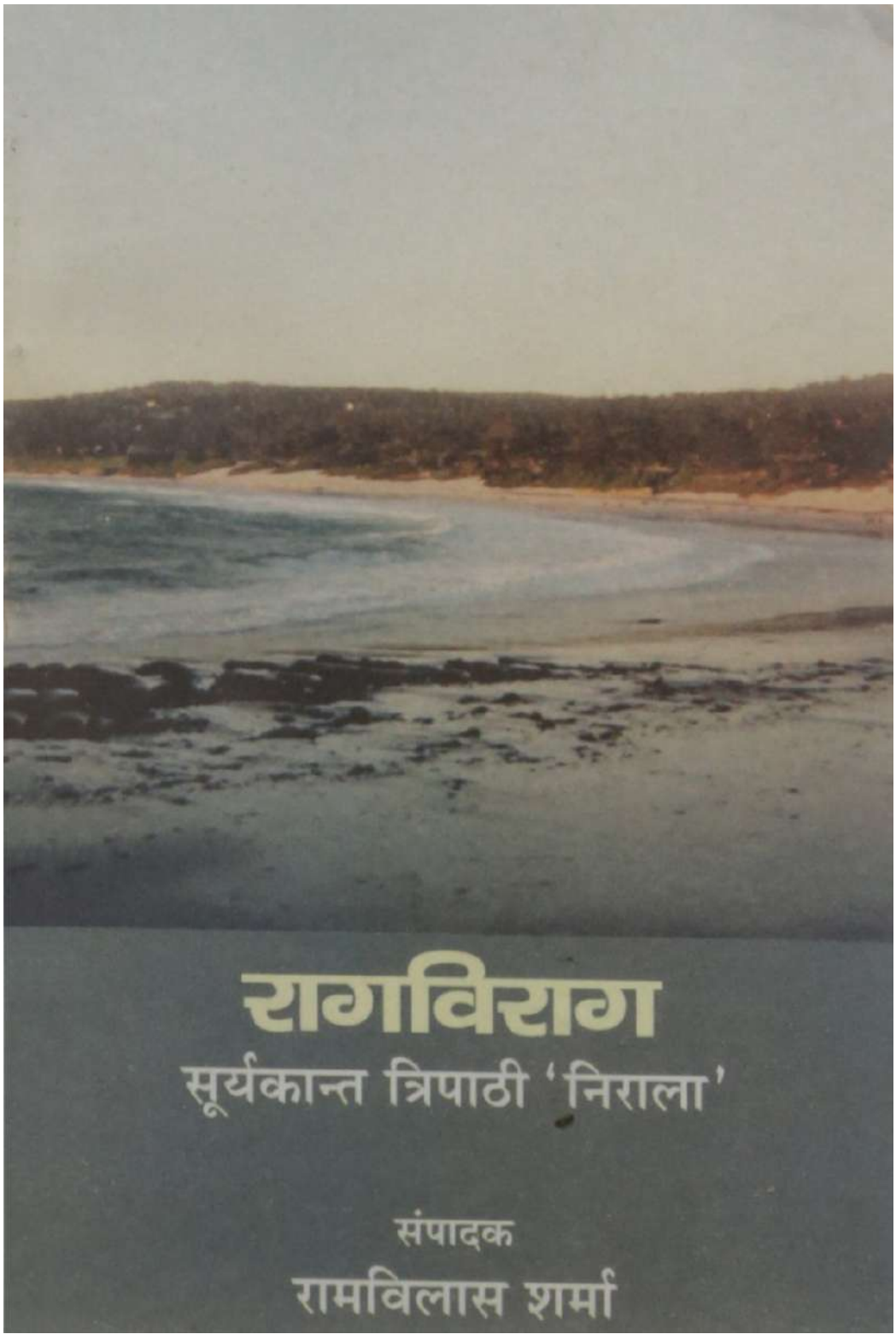

**तुलसीदास कृत कवितावली /** सुधाकर पाण्डेय (परिग्रहण संख्या H12601)

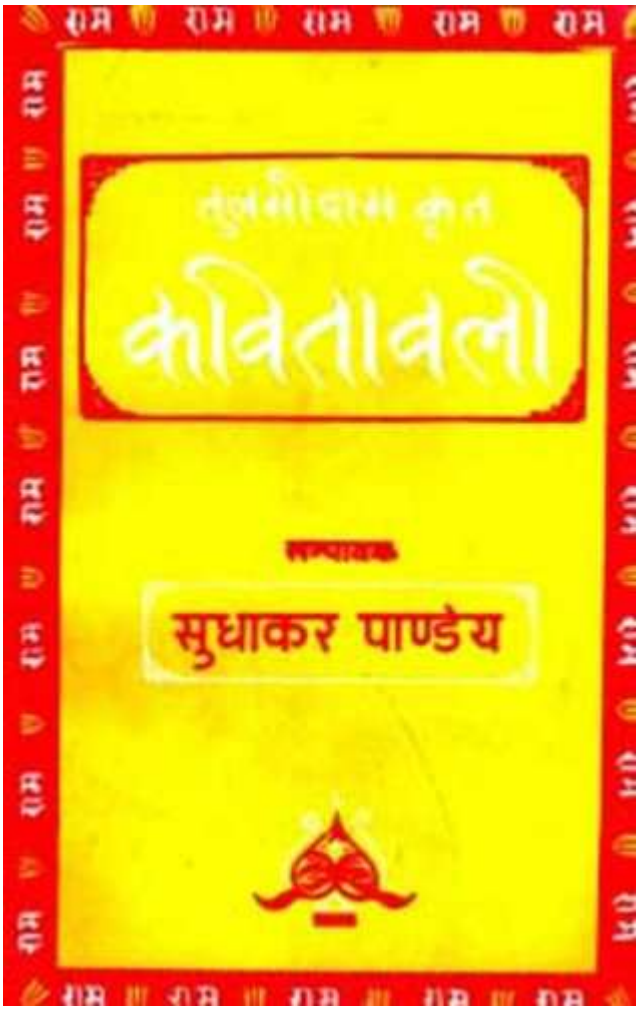

**निबंध निलय /**डॉ सत्येंद्र (परिग्रहण संख्या H12599)

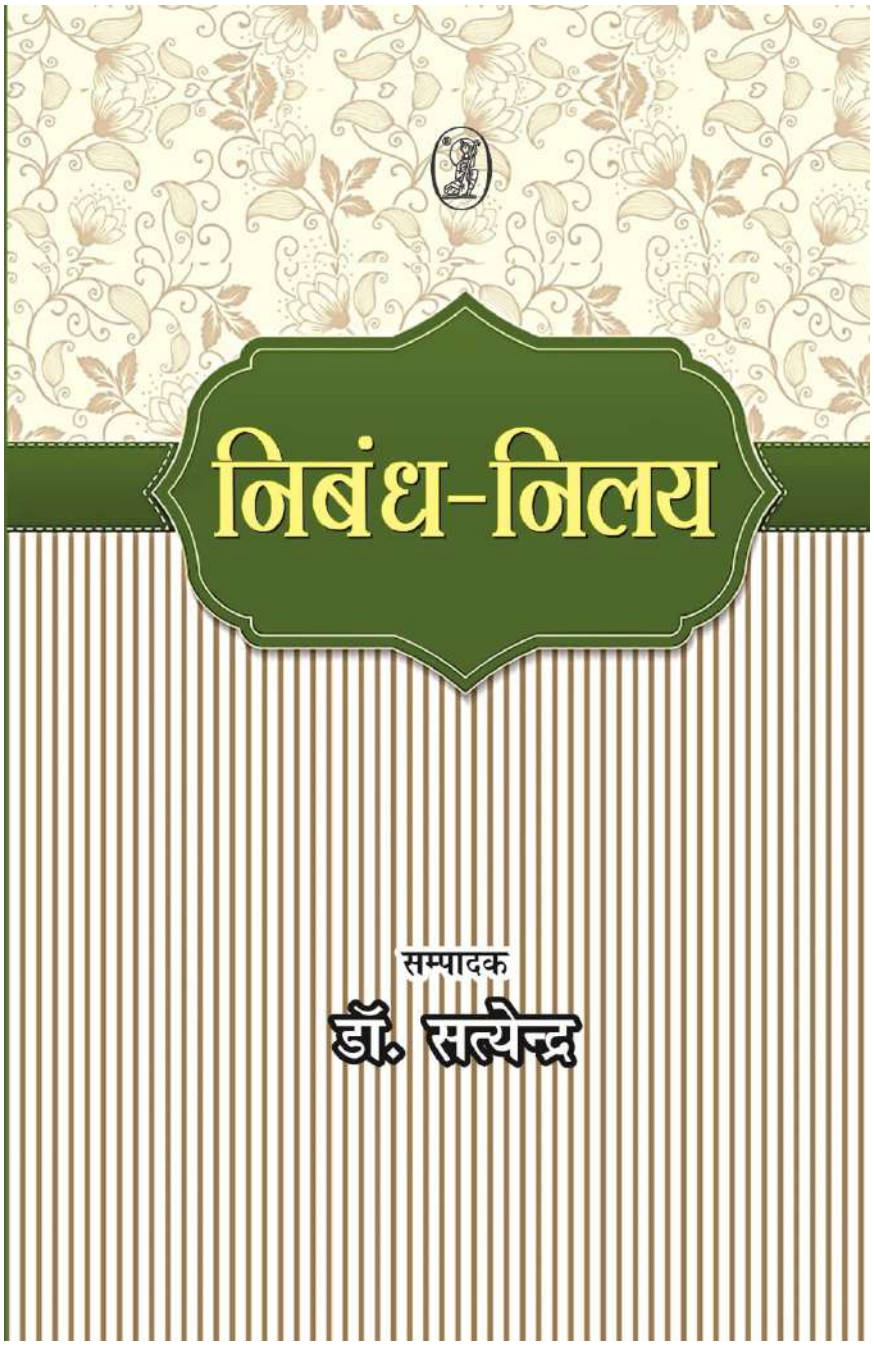

**भारत दुर्दशा /** भारतेंदु हरिश्चंद्र (परिग्रहण संख्या H12598)

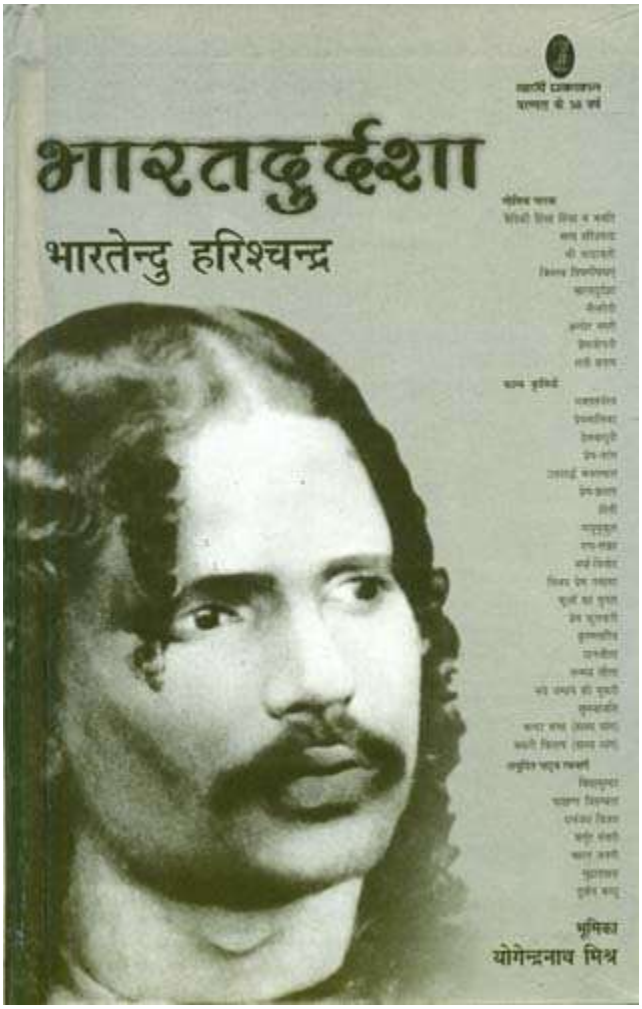

**कभी यूँ भी हो कोई वाकया**

/ सुदेश कुमार मेहर (परिग्रहण संख्या H12595)

**सारांश:** "दिल की ज़रख़ेज़ ज़मीं से उगती कोंपल" परवीन शाकिर ने कभी कहा था "मैं सच कहूँगी मगर फिर भी हार जाऊँगी" लेकिन रेणु नय्यर लगता है कुछ अलग ही इरादे से मैदान में उतरी है | वो सच बोलने की हिम्मत भी करती है और हार मानने को भी तैयार नहीं | उसके लहजे की बेबाक़ी उसकी शायरी में भी जा ब जा दिखाई देती है | उसका ख़ुद पर इतना एतमाद देख कर ख़ुशी भी होती है और डर भी लगता है | ख़ुद पर एतमाद बहुत ज़रूरी है लेकिन मैं मानता हूँ कि हमें बाहर से आने वाली ताज़ा हवा के लिये भी खिड़कियाँ खोल कर रखनी चाहिंये वर्ना हब्स का ख़तरा पैदा हो जाता है | मौजूदा दौर में उग रही शायरों की बेतरतीब खरपतवार में कुछ ख़ुदरौ पौधे ऐसे भी हैं जो अपनी अलग रंगत और ख़ुश्बू से पहचाने जा रहे हैं, रेणु भी उन में से एक है | अच्छा शेर तभी होता है जब आप अंदर से भी शायर हों | फ़न्नी ख़ामियां तो इस्लाह और अपनी मेहनत से दूर की जा सकती हैं लेकिन बुनियादी शर्त अपने एहसास का ईमानदाराना इज़हार है | रेणु अपने एहसास के पिघले हुए सोने को ज़ेवर बनाने का हुनर जानती है और उसके इस हुनर में मुसलसल निख़ार आ रहा है | सुबूत के तौर पर उसके कुछ र मुलाहिज़ा फ़रमाइये:- जिसको कहते हैं सुकूँ वो मुख़्तलिफ़ है और

जिस आलम में हूँ वो मुख़्तलिफ़ है ***** और नहीं कुछ बीनाई का धोखा है पागल है जो रेत को दरिया कहता है ***** रेत होने तलक का क़िस्सा हूँ बस तेरी याद तक संभलना है सुब्ह होते ही ये मुअय्यन था किस का सूरज कहां पे ढलना है ***** लगता है कुछ दिन ठहरेंगे मंज़र जो दर आये मुझ में कुछ तो बोल मुसव्विर मेरे किस के नक़्श मिलाये मुझ में ***** भूल जाना बड़ा ही आसाँ था मुझको ये भी हुनर नहीं आया ***** दिल की मिट्टी की ज़रख़ेज़ी कुछ ऐसी है कैसी भी हो फ़स्ल, उगाई जा सकती है ज़रा मंज़र बदलते ही बदल जायेंगे सब चेहरे बिछड़ते वक़्त का ग़म है, अभी तू नम न कर आँखें पहली किताब की इशाअत की ख़ुशी पहली औलाद की पैदाइश जैसी होती है | हम में से बहुत से लोग इस एहसास से गुज़रे हैं | मैं रेणु की इस ख़ुशी में शरीक हूँ और उसके रौशन मुस्तक़बिल के लिये दुआ-गो हूँ | सफ़र लम्बा है और दुश्वार है, मंज़िल भी दूर है लेकिन रेणु ने अपने लिये रास्ता बना लिया है और ये कोई मामूली बात नहीं | ख़ुशबीर सिंह "शाद".

**रेत समाधि: अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार 2022 से पुरस्कृत उपन्यास**

/ गीतांजलि श्री (परिग्रहण संख्या H12587)

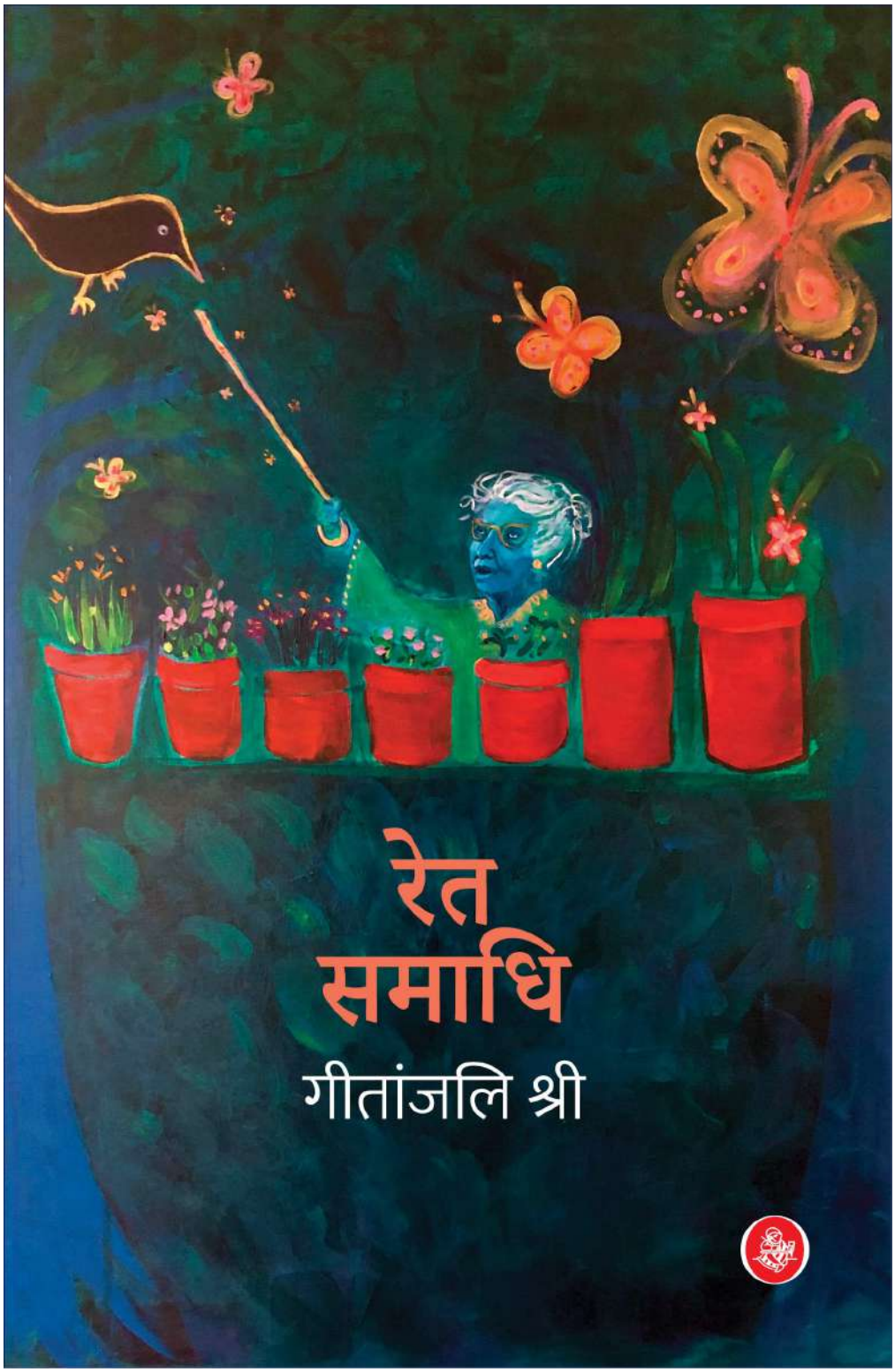

**सारांश:** अस्सी की होने चली दादी ने विधवा होकर परिवार से पीठ कर खटिया पकड़ ली। परिवार उसे वापस अपने बीच खींचने में लगा। प्रेम, वैर, आपसी नोकझोंक में खदबदाता संयुक्त परिवार। दादी बज़िद कि अब नहीं उठूँगी। फिर इन्हीं शब्दों की ध्वनि बदलकर हो जाती है अब तो नई ही उठूँगी। दादी उठती है। बिलकुल नई। नया बचपन, नई जवानी, सामाजिक वर्जनाओं-निषेधों से मुक्त, नए रिश्तों और नए तेवरों में पूर्ण स्वच्छन्द। हर साधारण औरत में छिपी एक असाधारण स्त्री की महागाथा तो है ही रेत-समाधि, संयुक्त परिवार की तत्कालीन स्थिति, देश के हालात और सामान्य मानवीय नियति का विलक्षण चित्रण भी है। और है एक अमर प्रेम प्रसंग व रोज़ी जैसा अविस्मरणीय चरित्र। कथा लेखन की एक नयी छटा है इस उपन्यास में। इसकी कथा, इसका कालक्रम, इसकी संवेदना, इसका कहन, सब अपने निराले अन्दाज़ में चलते हैं। हमारी चिर-परिचित हदों-सरहदों को नकारते लाँघते। जाना-पहचाना भी बिलकुल अनोखा और नया है यहाँ। इसका संसार परिचित भी है और जादुई भी, दोनों के अन्तर को मिटाता। काल भी यहाँ अपनी निरंतरता में आता है। हर होना विगत के होनों को समेटे रहता है, और हर क्षण सुषुप्त सदियाँ। मसलन, वाघा बार्डर पर हर शाम होनेवाले आक्रामक हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी राष्ट्रवादी प्रदर्शन में ध्वनित होते हैं 'कत्लेआम के माज़ी से लौटे स्वर', और संयुक्त परिवार के रोज़मर्रा में सिमटे रहते हैं काल के लम्बे साए। और सरहदें भी हैं जिन्हें लाँघकर यह कृति अनूठी बन जाती है, जैसे स्त्री और पुरुष, युवक और बूढ़ा, तन व मन, प्यार और द्वेष, सोना और जागना, संयुक्त और एकल परिवार, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, मानव और अन्य जीव-जन्तु (अकारण नहीं कि यह कहानी कई बार तितली या कौवे या तीतर या सडक़ या पुश्तैनी दरवाज़े की आवाज़ में बयान होती है) या गद्य और काव्य : 'धम्म से आँसू गिरते हैं जैसे पत्थर। बरसात की बूँद।'

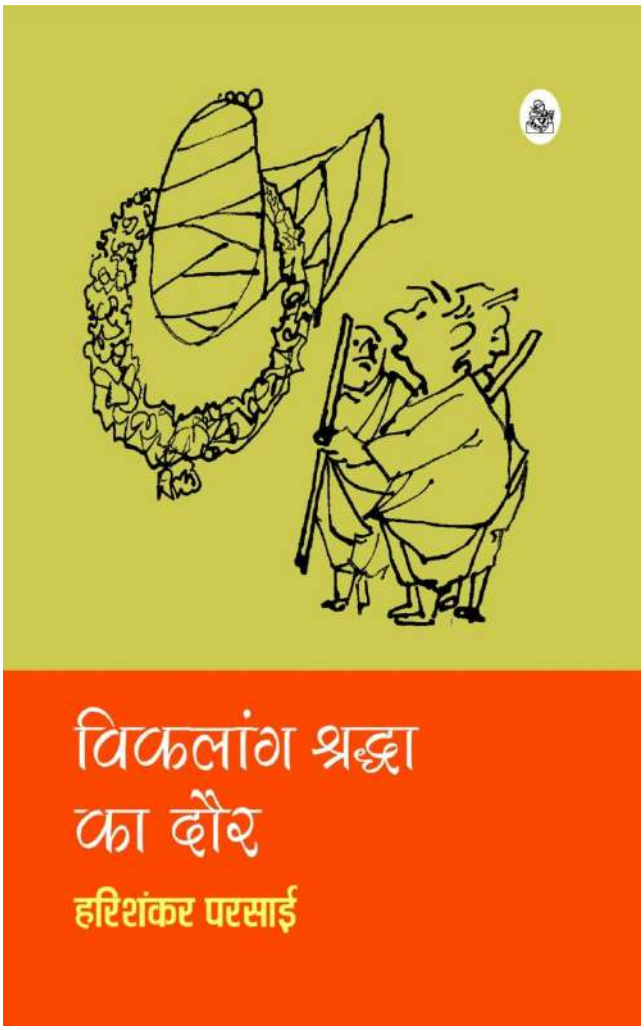


परिग्रहण संख्या – **H12584**

**सारांश** :

श्रद्धा ग्रहण करने की भी एक विधि होती है! मुझसे सहज ढंग से अभी श्रद्धा ग्रहण नहीं होती! अटपटा जाता हूँ! अभी 'पार्ट टाइम' श्रधेय ही हूँ! कल दो आदमी आये! वे बात करके जब उठे तब एक ने मेरे चरण छूने को हाथ बढाया! हम दोनों ही नौसिखुए! उसे चरण चूने का अभ्यास नहीं था, मुझे छुआने का! जैसा भी बना उसने चरण छु लिए! पर दूसरा आदमी दुविधा में था! वह तय नहीं कर प् रहा था कि मेरे चरण छूए य नहीं! मैं भिखारी की तरह उसे देख रहा था! वह थोडा-सा झुका! मेरी आशा उठी! पर वह फिर सीधा हो गया! मैं बुझ गया! उसने फिर जी कदा करके कोशिश की! थोडा झुका! मेरे पाँवो में फडकन उठी! फिर वह असफल रहा! वह नमस्ते करके ही चला गया! उसने अपने साथी से कहा होगा- तुम भी यार, कैसे टूच्चो के चरण छूते हो!

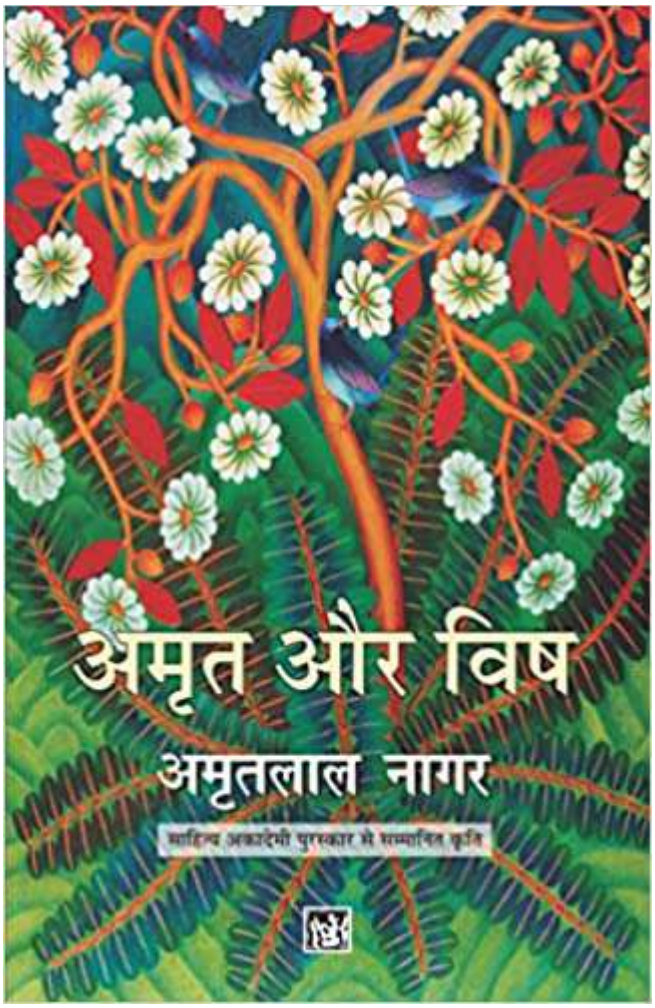


परिग्रहण संख्या – **H12585**

**सारांश** :

शिकरमों और ऊंट-गाड़ियों के एक सदी पुराने ज़माने से लेकर आज तक के तेजी से बदलते हुए रोचक मार्मिक और सहज जन-जीवन के अन्तरंग जिवंत चित्रों का वर्णन पढ़ते-पढ़ते आप यह भूल जायेंगे कि उपन्यास पढ़ रहे हैं, बल्कि यह अनुभव करेंगे कि आप स्वयं भी इस वतावारण के ही एक अभिन्न अंग हैं | इसकी रचना-शैली का अनूठापन औसत और प्रबुद्ध दोनों प्रकार के पाठकों को अपने-अपने ढंग से किन्तु समान रूप से प्रभावित करने की क्षमता रखता है | लेखक की सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय और दार्शनिक दृष्टि से जिस तन्मयता और गहराई से व्यक्ति और समाज का मनोरूप दर्शन यहाँ प्रस्तुत किया है, वह पाठकों का आमतौर से अन्यत्र दुर्लभ है | पुस्तक एक बार हाथ में उठा लेने पर पूरा पढ़े बिना आप रह नहीं सकते | यही नहीं, आप इसे बार-बार पढेंगे और हर बार एक नई दृष्टि और नये रस-बोध की ताजगी पाएंगे |

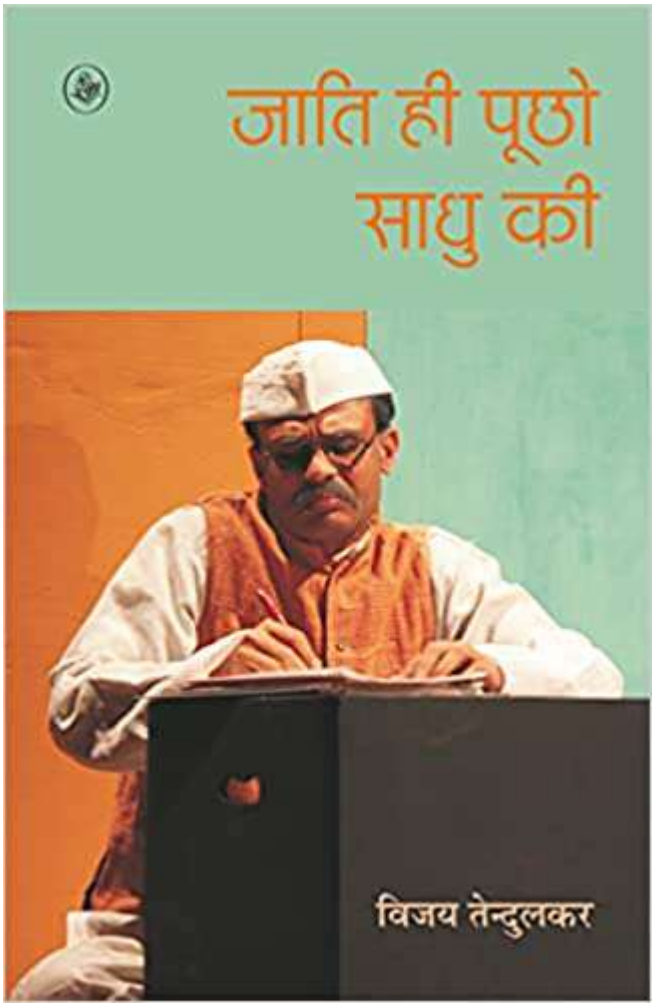


परिग्रहण संख्या – **H12586**

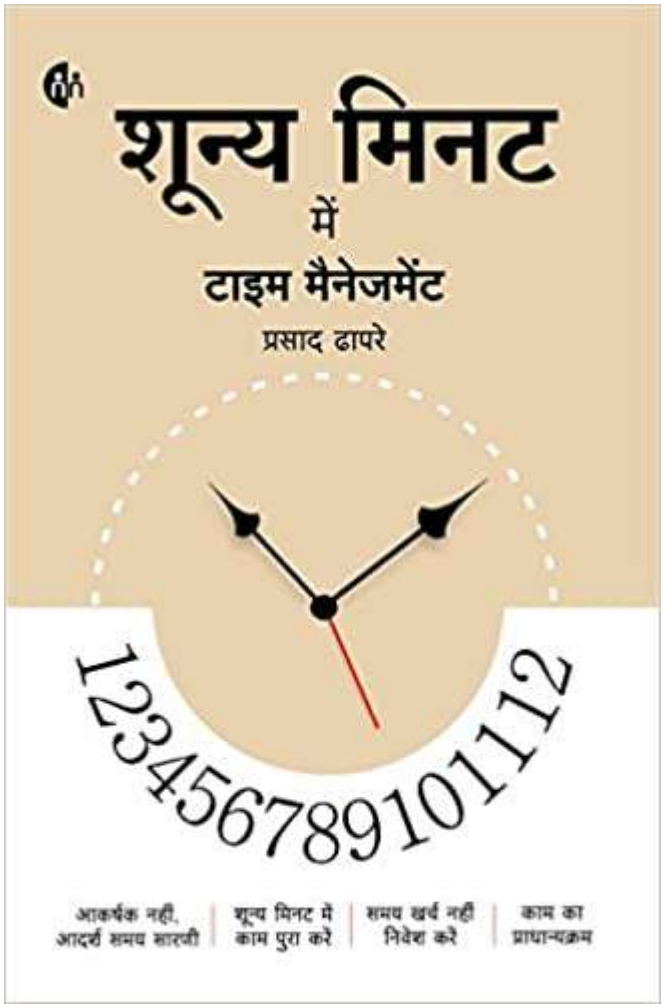


परिग्रहण संख्या – **H12582**

**सारांश :** यदी हमारे पास खुद का टाइम टेबल नहीं है तो हमें दूसरों के टाइम टेबल के अनुसार जीना पड़ता है। साल, महीने, दिन, घंटे, मिनट, सेकंद बचाने का रहस्य समय का प्रबंधन सिखने के लिए एक बार समय दे और जीवन भर के लिए समय बचाएँ। मल्टीटास्किंग की कला आत्मसाद करने का सूत्र

## इकिगाई: लम्बे और खुशहाल जीवन का जापानी रहस्य

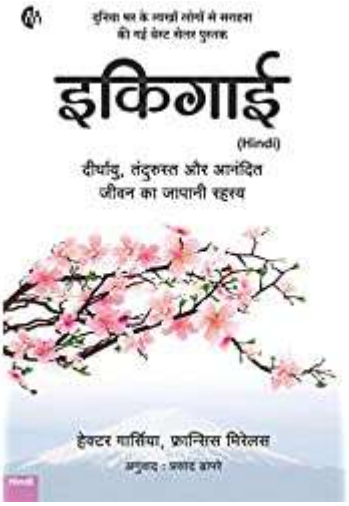


परिग्रहण संख्या – **H12581**

**सारांश : दीर्घायु, तंदुरुस्त और आनंदित जीवन का जापानी रहस्य जापानी लोग मानते है कि हरइन्सान का इकिगाई होता ही है। इस किताब के लिए इकिगाई इस संकल्पना की जानकारी इकट्ठा करते वक्त लेखक ने कई सारे शतायुषी लोगों से बातचीत करके उनके दीर्घायु जीवन का रहस्य जान लिया। वह रहस्य इस किताब के माध्यम से आपके सामने रखा गया है। यह किताब आपको आपका इकिगाई प्राप्त करने में सहायता करेगी। * शारीरिक स्वास्थ्य के लिए 80 प्रतिशत का रहस्य। * चुस्त शरीर, चुस्त मन * तनाव का लाभ लेने की कला * स्टीव्ह जॉब्ज का जापानी संस्कृति के लिए प्रेम * लोगोथैरपी और मोरिता थैरपी * तंत्रज्ञान और संस्कृति का संगम Sapiens Manav Jati ka Sankshipt Itihas डॉ| युवाल नोआ हरारी द्वारा लिखित किताब सेपियन्स में मानव जाति के संपूर्ण इतिहास को अनूठे परिप्रेक्ष्य में अत्यंत सजीव ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यह प्रस्तुतिकरण अपने आप में अद्वितीय है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक युग तक मानव जाति के विकास की यात्रा के रोचक तथ्यों को लेखक ने शोध पर आधारित आँकडों के साथ इस तरह शब्दों में पिरोया है कि यह किताब निश्चित रूप से मॉर्डन क्लासिक किताबों की श्रेणी में शुमार होगी।करीब 100,000 साल पहले धरती पर मानव की कम से कम छह प्रजातियाँ बसती थीं, लेकिन आज सिर्फ हम (होमो सेपियन्स) हैं। प्रभुत्व की इस जंग में आख़िर हमारी प्रजाति ने कैसे जीत हासिल की? हमारे भोजन खोजी पूर्वज शहरों और साम्राज्यों की स्थापना के लिए क्यों एकजुट हुए? कैसे हम ईश्वर, राष्ट्रों और मानवाधिकारों में विश्वास करने लगे? कैसे हम दौलत, किताबों और कानून में भरोसा करने लगे? और**

कैसे हम नौकरशाही, समय-सारणी और उपभोक्तावाद के गुलाम बन गए? आने वाले हज़ार वर्षों में हमारी दुनिया कैसी होगी? इस किताब में इन्हीं रोचक सवालों के जवाब समाहित हैं।सेपियन्स में डॉ| युवाल नोआ हरारी ने मानव जाति के रहस्यों से भरे इतिहास का विस्तार से वर्णन किया है। इसमें धरती पर विचरण करने वाले पहले इंसानों से लेकर संज्ञानात्मक, कृषि और वैज्ञानिक क्रांतियों की प्रारम्भिक खोजों से लेकर विनाशकारी परिणामों तक को शामिल किया गया है। लेखक ने जीव-विज्ञान, मानवशास्त्र, जीवाश्म विज्ञान और अर्थशास्त्र के गहन ज्ञान के आधार पर इस रहस्य का अन्वेषण किया है कि इतिहास के प्रवाह ने आख़िर कैसे हमारे मानव समाजों, हमारे चारों ओर के प्राणियों और पौधों को आकार दिया है। यही नहीं, इसने हमारे व्यक्तित्व को भी कैसे प्रभावित किया है।

# 5 AM क्लब : प्रातः काल को अपना बनायें एवं उन्नत जीवन पायें

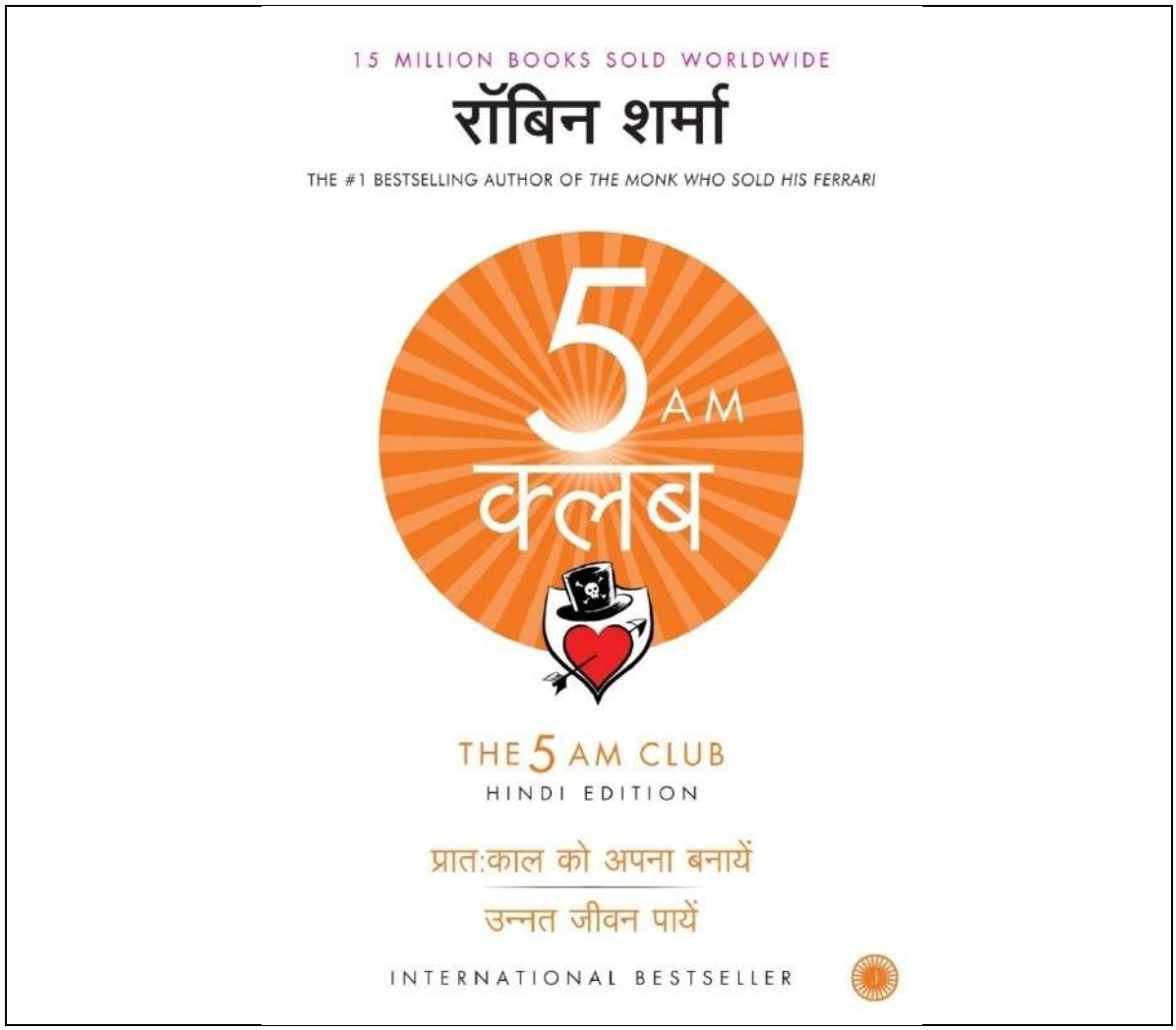


परिग्रहण संख्या – **H12580**

(मुकेश, अकादमी पुस्तकालय द्वारा संकलित और तैयार किया गया)